विश्व समभाव दिवस

7 सितम्बर, 2016

प्रवेश के समय शहनाई

एंकर :- आज विश्व समभाव दिवस पर हम उपस्थित सभी माननीय अतिथियों का हार्दिक अभिनंदन करते हैं। आज के शुभ दिवस को पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मनाने के लिए इस सभागार में हमारे बीच उपस्थित हैं दिल्ली एन.सी.आर के स्कूलों के प्रधानाचार्य एवं अध्यापकगण, सतयुग दर्शन ट्रस्ट की शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राएँ एवं शिक्षकगण, विभिन्न शहरों से आए ट्रस्ट के सदस्य। कार्यक्रम के आरंभ में मैं सतयुग दर्शन ट्रस्ट के मार्गदर्शक श्री सजन जी, सतयुग दर्शन ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी श्रीमती रेशमा गाँधी जी, सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र की चेयरपरसन श्रीमती अनुपमा तलवार जी से निवेदन करती हूँ कि वे दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करें:-

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान (सात बार)

दीप प्रज्ज्वलन

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र, प्रियतम सर्वव्यापक है। उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

समभाव दिवस के शुभ अवसर पर सर्वप्रथम आओ जानें कि ईश्वर सम की महिमा व महत्त्व का वर्णन किस प्रकार करते है:-

ईश्वर कहते हैं
जहाँ सम है वहाँ हम हैं
इसलिए सम हो जाओ
और मुझे समक्ष पाओ।

फिर सब बराबर हैं
यह भाव मन में अपनाओ
व समचित्त हो समचर हो जाओ
इस तरह अक्लमंद नाम कहा
यश कीर्ति को पाओ।

ख़्याल ध्यान स्थिर रखने हेतु
एकाग्रचित्त हो जाओ और
विवेकशक्ति का भरपूर इस्तेमाल करो।

इस तरह सत्य-असत्य की परख कर
अपने मन की विशुद्धता की भाल करो
तभी तो ख़्याल इधर-उधर नहीं भटकेगा
और मन परमेश्वर में लीन रहेगा।

फिर सम यानि समान होने का भाव
हृदय पटल पर टिका लो
और सबके साथ विचरते समय
सब पक्षों को ही बराबर मानो।

जिसे मिलो प्रेम से मिलो, जिससे बोलो स्पष्टता से बोलो
और जो भी करो सर्वहित के लिए करो।